East African Scholars Journal of Education, Humanities and Literature
Abbreviated Key Title: East African Scholars J Edu Humanit Lit
ISSN 2617-443X (Print) | ISSN 2617-7250 (Online) |
Published By East African Scholars Publisher, Kenya
Volume-2 | Issue-12 | Dec-2019 | DOI : 10.36349/EASJEHL.2019.v02i12.010

OPEN ACCESS

Research Article

विदेश नीति के परिप्रेक्ष्य में नेहरू ।

ज़िले सिंह चौधरी*
राजनीति विज्ञान विभाग, सत्यवती कालेज सांध्य, दिल्ली विश्वविद्यालय, अशोक विहार, फेज-III, दिल्ली-110052

*Corresponding Author
ज़िले सिंह चौधरी

जवाहरलाल नेहरु भारत के कुछ स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे जो मात्रभूमि के लिए अपना जीवन भी बलिदान कर देते हैं | वह उन भाग्यशाली नेताओं में से एक थे जो एक सफल समाप्ति का स्वतंत्रता संग्राम लेकर आये | आजादी के संघर्ष में गाँधी जी के महान सहयोगियों के अलावा नेहरु एक प्रमुख स्थान रखते थे; इस बात में कोई अतिश्योक्ति नहीं | जवाहरलाल नेहरु का जन्म १४ नवम्बर १८८९ को एक भव्य कश्मीरी ब्राह्मण के यहाँ इलाहाबाद में हुआ था | उन के पिता मोतीलाल नेहरु न केवल एक प्रतिष्ठित वकील बल्कि एक लोकप्रिय कांग्रेस नेता, एक स्वराज पार्टी के नेता, केन्द्रीय विधान सभा के सदस्य और नेहरु रिपोर्ट तैयार करने वाले भी थे जिसमें भारत के लिए अधिराज्य का दर्जा देने की माँग की गयी थी | अपने पिता के प्रारम्भिक चरण की तरह, जवाहर पश्चिम संस्कृति द्वारा प्रभावित थे और और शानदार जीवन का नेतृत्व करते थे | इंग्लैंड में अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद नेहरु १९१२ में भारत वापिस आये |

भारतीय राजनीति में नेहरु का प्रवेश स्थित की द्रव्यता के रूप में चिह्नित हुआ | भारतीय राष्ट्र कांग्रेस पहले से ही नरम-पंथियों व चरम-पंथियों के मध्य संघर्ष के कारण विभाजित हो चुकी थी | पर कांग्रेस का एक जन आधार अभी तक था | ब्रिटिश सरकार की "फूट डालो और राज करो" की नीति के साथ मुस्लिम लीग पहले से ही बन गयी थी | भारतीय राष्ट्रिय कांग्रेस के एक सदस्य के रूप में, उन्होंने १९१२ में बनाकीदोरे पटना में कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया | उन्होंने उर्जा और पहल के बिना संगठन की नींव रखी | स्थिति धुंधली और निराशाजनक थी | उन्होंने तिलक और एनी बेसेंट द्वारा स्थापित होम रूल लीग के साथ अपनी राजनीतिक एसोसिएशन शुरू की | वह १९१५ में उत्तर प्रदेश की किसान सभा के कार्यों में भी सक्रीय हुए | वह दिसम्बर १९१६ में राष्ट्रीय कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में गाँधी जी से मिले और उनके विशाल व्यक्तित्व से नेहरु सदमें में आ गये | गाँधी जी, सी.आर.दास और मोतीलाल नेहरु से पूछ कर इस घटना हेतु एक गैर-सरकारी जाँच समीति बनाई गयी | इस समीति के सचिव के रूप में उनको उस जगह की यात्रा करने का और लोगों पर हुई यातनाओं के विषय में जानने का अवसर मिला | समीति के जरिये जनरल डायर को जिम्मेदार ठहराया गया, हालांकि बब्रिटिश सरकार ने उसे बरी कर दिया | उनकी राष्ट्रवादी भावना जगी और मोतीलाल नेहरु की आपत्ति के बावजूद, वह ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आन्दोलन के साथ रुचि रखते थे इस रूप से जो उन के लिए एक धार्मिक मुद्दा था | जब १९२० में असहयोग आन्दोलन शुरू हुआ, उन्होंने इसमें भाग लिया और सत्याग्रह में अपनी सक्रीय भूमिका निभाते हुए गिरफ्तार भी हुए | इस के बाद जेल जाना उन के जीवन के एक अंग बन गया | उन्होंने जीवन के अलग-अलग अंतराल पर, ब्रिटिश जेल में नौ से ज्यादा वर्ष काटे |

चौरा-चौरी घटना के बाद आन्दोलन के अचानक विलंबन से वह नाराज रहे | उन्होंने गाँधी जी को यह पत्र लिखा कि यह घटना सरकार के उकसाव का प्रतिफल थी | इस तरह के बड़े पैमाने के संघर्ष में, यहाँ-वहाँ हिंसा अपरिहार्य है और अहिंसा की अपने आप में एक किनारे के रूप में प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए | हालांकि उनके क्रांतिकारी उत्साह गाँधीवादी आन्दोलन विधि के साथ सामंजस्य बनाये हुए थे | १९२३ में वह कांग्रेस के महासचिव के रूप में नियुक्त किये गये | १९२७ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिकारिक प्रतिनिधि के रूप में, उन्होंने ब्रसेल्स में ओप्रेस्स्ड राष्ट्रीयताओं की कांग्रेस में भाग लिया | नेहरु ने शाही ब्रिटिश सरकार के खिलाफ भारत के अहिंसक संघर्ष के बारे में अन्य देशों को प्रभावित कर इस अवसर का उपयोग किया | वह एक अंतर-राष्ट्रीय हस्ती के रूप में उभरे, और वह साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ने के लिए लीग की कार्यकारी समीति के एक सदस्य के रूप में निर्वाचित किये गये | उन्होंने १९२७ में सोवियत-रूस का दौरा करते समय कहा कि वह साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित हैं | इस के बाद साइमन कमिशन में एक भी भारतीय को शामिल नहीं किया गया, कांग्रेस पार्टी ने इस के साथ सहयोग करने हेतु

Quick Response Code

Journal homepage:
http://www.easpublisher.com/easjehl/

Article History
Received: 15.11.2019
Accepted: 24.12.2019
Published: 28.12.2019

Copyright @ 2019: This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution license which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non commercial use (NonCommercial, or CC-BY-NC) provided the original author and source are credited.

अस्वीकृति दी नेहरु आयोग के विरोध में 'हड़ताल' में भाग लिया। सुभाषचन्द्र बोस और श्रीनिवास अयंगर के साथ नेहरु ने अपनी माँगें आगे रखी और वह माँग थी- पूर्ण स्वराज । अधिराज्य स्तर के विचार के विरोध में कांग्रेस पार्टी का लक्ष्य पूर्ण-स्वराज होना चाहिए। यह नेहरु जी की माँग थी। उस समय तक अधिराज्य स्तर मोतीलाल नेहरु की अध्यक्षता में आयोजित सभी पार्टियों की समिति का लक्ष्य बन गया।

उन्होंने स्वराज की अवधारणा को पूर्ण स्वतंत्रता के सन्दर्भ में नए सिरे से परिभाषित किया। गाँधी जी के आशीष के साथ, नेहरु लाहौर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष बने और ऐतिहासिक स्वतंत्रता संकल्प ३१ दिसंबर १९२९ को आधी रात को पारित कर दिया गया। वह १९३६, १९३७ और १९४६ में भी राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष बने। नेहरु जी ने इलाहाबाद में अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया और जनवरी १९३१ तक वह कैद में रहे। हालाँकि कांग्रेस ने फर्स्ट राउंड टेबल कांफ्रेंस का बहिष्कार किया, फिर भी गाँधी-इरविन की सूझ-बूझ के अनुसार गाँधी जी सेकिंड राउंड टेबल कांफ्रेंस के लिए सहमत हो गए।

मार्च १९३१ की संधि। लेकिन गाँधी जी इस सम्मेलन में किसी भी तरह की व्यवहारिक सफलता हासिल नहीं कर पाए और खाली हाथ लौट आये। नेहरु ने ब्रिटिश सरकार के 'साम्प्रदायिक पुरस्कार' का गम्भीर रूप से विरोध किया जिस में सिक्ख, मुस्लिम, यूरोपियन और दूसरे दलित वर्गों के अलग मतदाताओं को प्रदान किया। तब गाँधी जी ने इस सांप्रदायिक पुरस्कार के खिलाफ मृत्यु पर्यन्त, अपना अनशन शुरू कर दिया, जिस ने नेहरु पर एक गहरी भावना का उद्भव किया। १९३५ का भारत सरकार अधिनियम कांग्रेस की माँगों से बहुत दूर था। नेहरु ने इसे 'गुलामी और उत्पीड़न का एक चार्टर' के रूप में करार दिया। फिर भी कांग्रेस ने चुनाव में भाग लेने का फैसला किया जिसकी इस अधिनियम के प्रावधान के रूप में घोषणा की गयी थी। नेहरु के नेतृत्व में कांग्रेस छः प्रान्तों में पूर्ण बहुमत से सुरक्षित रही। और कुल ग्यारह प्रान्तों में से दो अन्य के साथ गठबंधन सरकार का गठन किया। लेकिन १९३९ अक्टूबर में कांग्रेस सरकार ने इस्तीफा की घोषणा की जब भारत को भारतीय नेताओं के साथ बिना किसी परामर्श के द्वितीय विश्व युद्ध में ब्रिटेन के साथ-सा भी बनाया गया।

ब्रिटिश सरकार ने भारत की धरती पर मुसलमानों ले लिए एक अलग होमलैंड की मुस्लिम लीग की माँग को समर्थन देकर एक भारी सीमा तक साम्यवाद को भी प्रोत्साहित किया। क्रिप्स मिशन की विफलता के बाद, गाँधी जी ने भारत के आत्म-निर्णय के अधिकार हेतु आग्रह किया। जब कि गाँधी जी ब्रिटिश सरकार की तत्काल वापसी चाहते थे और इस के लिए दबाव डालने हेतु एक कड़ा रवैया भी अपनाया, उस समय भारतीय नेताओं के बीच विचारों का भी मतभेद था। हालाँकि नेहरु एक आन्दोलन में जाने में अनिक्छुक थे, पर गाँधी जी 'सत्याग्रह' शुरू करने के लिए दृढ रहे । लेकिन ब्रिटिश सरकार अभी तक अड़ी हुई थी और, तब नेहरु जी ने अपना गिरफ्तार किया और ३ साल के लिए कैद किया गया। युद्ध के बाद नेहरु को रिहा कर दिया गया, वह ब्रिटिश सरकार के साथ विभिन्न वार्ताओं में कांग्रेस के एक प्रमुख व्यक्ति बने। सरकार की ओर से लार्ड वोवेल ने उन्हें आमंत्रित किया, उन्होंने भारत सरकार के पहले भारतीय(अंतरिम) का नेतृत्व किया।

उसी वर्ष सम्विधान सभा के लिए चुनाव भी आयोजित किये गये। लार्ड माउंटबैटन को भारत के वायसराय के रूप में प्रतिनियुक्त किया गया और सत्ता का हस्तांतरण पूरा किया गया। नेहरु, गाँधी आदि के विरोध के बावजूद भारत ने जिन्ना के सिद्धांत अधीन "दो-राष्ट्र" में विभाजित किया गया। नेहरु २७ मई १९६४ तक, आज़ाद भारत के प्रधानमंत्री रहे। इसी सफर के दौरान उन्होंने भारत की आंतरिक स्तिथि को समझा और उन कारकों पर अपना कार्य करना शुरू किया, जिन में से एक महान आयोजन विदेश नीति के रूप में उभरा। यह कार्य लगभग स्वतंत्रता से से पहले अपनी नींव की और अग्रसर था, जिसे स्वतंत्र भारत में एक रूप मिला। इस विदेश नीति का रास्ता लगभग कुछ इस तरह से रहा।

भारत की विदेश नीति को स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमन्त्री प. जवाहरलाल नेहरु के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया था। भारत की विदेश नीति को आकार देने के लिए लोकतंत्रात्मक और प्रगति की ताकत वृद्धि और साम्राज्यवाद की ताकतों की दुर्बलता से दूसरे विश्व-युद्ध के बाद अंतर-राष्ट्रीय विकास द्वारा काफी हद तक प्राभावित हुई।यूरोप और एशिया में उत्तर युद्ध युग में कई देश सामाजवादी व्यवस्था बनाने के लिए पूंजीवादी व्यवस्था से तोड़ दिए गए। उस समय राष्ट्रीय मुक्ति के लिए आन्दोलनों में एक लहर चली जो कि साम्राज्यवाद के औपनिवेशिक व्यवस्था के पतन में परिणामस्वरुप रही।भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी ने पड़ोसी देशों के साथ सहयोग स्थापित करने के लिए एक इच्छा व्यक्त की जिसे १९२० के दशक में एक प्रस्ताव के रूप में पारित किया गया।लेकिन उस बिन्दु पर भारत की आंतरिक स्थिति अंतर-राष्ट्रीय विकास के लिए ध्यान देने हेतु अनुमति नहीं देती। यह मुख्यतः नेहरु जी के प्रयत्न के कारण ही था कि मध्य २०वीं शती के बाद कांग्रेस पार्टी ने अंतर-राष्ट्रीय मामलों में दिलचस्पी लेना शुरू किया। कांग्रेस ने स्वतंत्रता एवं समानता हेतु लोगों में और जातियों के विषय का उनके संघर्ष में समर्थन करने का संकल्प लिया। उन्होंने दुनिया भर में नस्लीय भेद-भाव की निंदा का निर्णय लिया। १९२७ के बाद नेहरु जी ने कांग्रेस की विदेश नीति तैयार करने में सक्रीय भाग लिया। उस का प्रभाव यह था कि यह पहला विदेश विवरण था। यह एक घोषणा समाहित है कि भारत की साम्राज्यवाद और अन्य युद्धों में भागीदारी नहीं होनी चाहिए। इस नीति को देर में १९२० और १९३० के दशक में प्रमुख विदेश नीति सिद्धांत के रूप में लिया गया था। जब १९३० के दशक में जापान, इटली और जर्मनी साम्राज्यवादी आक्रमण में खुद को संलग्न किये हुए थे, कांग्रेस ने उनके क्रूर साम्राज्यवादी आरूपों की निंदा की और इसका तरह चीन, इटोपिया आदि जैसे विभिन्न देशों में राष्ट्रवादी ताकतों के कारण बचाव करने हेतु प्रस्ताव पारित किये।

अंतर युद्ध की अवधि में भारत की विदेश नीति का एक महत्तवपूर्ण भाग आकार ले रहा था। भारत नाजी जर्मनी

के खिलाफ ब्रिटेन के साथ सहयोग करने के सहमत हुआ | लेकिन सहयोग के बाद ब्रिटिश शर्तों पर माँग की गयी थी, नवगठित कांग्रेस मंत्रालयों ने इस्तीफा दे दिया |कोई समय था जब भारत फासीवादी देशों के लिए सहानुभूति किया करता था | भारतीय ने लगातार १९३९ अगस्त में जर्मनी व सोवियत संघ के बीच हस्ताक्षरित अनाक्रमण संधि की आलोचना की और इसे केवल एक दिखावे के रूप में समझा जाता है, ऐसा माना गया |जापान की धरती पर अमेरिका द्वारा परमाणु बम गिराने पर भारत की भावनाएं आहात हुई और उसने पूर जोर निंदा की थी | जल्द ही सितम्बर १९४६ में अंतरिम सरकार के गठन के बाद, भारत ने सभी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने के लिये कदम उठाये |उस समय के दौरान अंतरिम सरकार के कार्यालय में यह कार्य किया गया कि भारत ने राजनैतिक सम्बन्धों की स्थापना की और अमेरिका, सोवियत संघ, चीन और अन्य देशों के साथ राजदूतों का आदान-प्रदान किया |इसी बीच दूसरे विश्व युद्ध में फ़ासिज्म की ताकतों और जापानी सैनिक शाशन का मार्ग अंतर-राष्ट्रीय क्षेत्रों में सेना के सहसम्बन्ध तबदील हुए |यह एशिया में राष्ट्रीय मुक्ति के लिए आन्दोलन की एक लहर के परिणामस्वरुप था |

कांग्रेस की ओर से नेहरु जी ने १९२६ ब्रंसेल्स में आयोजित एक साथ कई अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया और साम्राज्यवाद से लड़ने की अपने गहन उद्देश्य को घोषित किया | जवाहरलाल नेहरु के नेतृत्व में कांग्रेस ने लगातार नव-मुक्त देशों और साम्राज्यवाद के खिलाफ अनेक संघर्ष का समर्थन किया | आज़ादी के बाद नेहरु भारत के विदेश नीति के आभासी निदेशक बने | और उनके मार्गदर्शन के अधीन भारत इस नीति को अपनाने वाला पहला राज्य बन गया जो कि गुट-निरपेक्षिता की नीति- अंतर-राष्ट्रीय सम्बन्धों के इतिहास में नया था | वह मिस्र के नासिर, युगोस्लाविया के जोडस्त बरोज टीटो और इंडोनेशिया के सुकर्णों द्वारा प्रवीणता से समर्थित किया गया | १९४७ प्रारंभ में, भारत की पहल पर दिल्ली में एशियाई सम्बन्ध सम्मलेन बुलाया गया जहाँ स्वतंत्र भारत की विदेश नीति के सिद्धांतों को घोषित किया गया था | इस में २९ देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था | इस सम्मलेन ने सभी एशियाई देशों की एकजूटता को मजबूत बनाने में मदद की |

नेहरु जी ने बन्दुंग में १९५५ में आयोजित एफ्रो-एशियाई सम्मलेन में भी भाग लिया और वहाँ गुट-निरपेक्षता की नीति को लोकप्रिय बनाया | इस सम्मलेन में निहीत एजेंडा आर्थिक एवं सामाजिक सहयोग, आत्म निर्णय और मानवीय अधिकारों के लिए सम्मान था और वास्तव में विश्व शांति और सहयोग को बढ़ावा देना था |गुट-निरपेक्षता की नीति से भाव युद्ध की अनिवार्यता की स्वीकृति से था लेकिन दृढ़ विश्वास था कि इस को टाला जा सकता था | और जो भारत की अपनी ताकत द्वारा नियंत्रित किया गया | इस का आशय अपने आप को किसी भी प्रकार के गठजोड़ या प्रतिबद्धताओं के साथ उलझाना नहीं था कि युद्ध और विवाद करने के लिए नेतृत्व करेंगे |गुट-निरपेक्षता पूर्वाग्रह के बिना हर मुद्दे का न्याय करने स्थित अस्पष्ट रही | इस कड़वे विवादों में प्रभावशाली मध्यस्थता की सभावना को बढ़ाया और इस तरह विश्व शांति की सम्भावना चमकी | कोरियाई युद्ध में और इंडो-चाइना की उलझन में भारत ने शांति कायम करने हेतु महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई | इस नीति का रहस्य यह है कि भारत न तो स्याही रूप से समर्थक पश्चिम और न ही पूर्व के साथ है | वह मुद्दों पर कम्युनिस्ट ब्लॉक के साथ स्पष्ट रूप से किया गया था जैसे कि निरस्त्रीकरण, नस्लीय भेदभाव, उपनिवेशवाद और संयुक्त राष्ट्र की चीन की सदस्यता | लेकिन उत्तर कोरिया की आक्रमकता के प्रमुख मुद्दों पर भारत ने स्पष्ट रूप से कम्युनिस्टों की आलोचना की | समर्थक पश्चिम यह कदम कोरिया में अमेरिकी सेना के दुस्साहस का विरोध करने से भारत को नहीं बचा पाया | भारत ने हंगरी के स्वेज और सोवियत हस्तक्षेप में एंग्लो-फ्रेंच कार्यवाही की सामान रूप में निंदा की | यह गुट-निरपेक्षता अलगाव का भी अर्थ नहीं रखती | क्योंकि भारत के लगभग सभी स्वतंत्र राज्यों के साथ राजनैतिक सम्बन्धों की स्थापना की थी | वह संयुक्त राष्ट्र का एक सदस्य था और राष्ट्र के राष्ट्र मंडल में भी भाग लिया | इन सब का आधार सहयोग था, लेकिन एक ही समय में एक स्वतंत्र कोर्स का अनुकरण किया | गुट-निरपेक्षता की नीति अन्तर-राष्ट्रीय आचरण के पंचशील की गणना कर रहे, पाँच सिद्धांतों पर किया गया था | यह १९५४ में निर्मित और पहली परिकल्पना थी |

यह सिद्धांत थे :

१. एक-दूसरे के क्षेत्रीय अखंडता और सम्प्रभुता के लिए आपसी सम्मान
२. अनाक्रमण
३. एक-दुसरे के सैन्य मामलों में गैर हस्तक्षेप
४. समानता और पारस्परिक लाभ
५. शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व |

अप्रैल १९५५ में बर्मा, चीन, लाओस, नेपाल, वियतनाम लोकतान्त्रिक गणराज्य, यूगोस्लाविया और कम्बोडिया, पंचशील स्वीकार कर लिया था |गैर-संरेखन विश्व-शांति बनाये रखने के लिए तकनीक या एक रणनीति था | इस तरीके से कि प्रत्येक राष्ट्र दूसरों को परेशान किये बिना अपने स्वयं की रुचि और हितों के लिए कर्म करते हैं | नीति लोकतंत्र और समाजवाद की घरेलू जरूरतों के साथ ले में भी थी | गुट-निरपेक्षता की नीति को अपनाने के लिए एक प्रमुख आर्थिक कारक भारत के आर्थिक पिछड़ेपन से किया गया था | विदेशी अनुदान विकासशील या अविकसित अर्थव्यवस्था के लिए एक महत्त्वपूर्ण घटक था | इसलिए अनुदान सभी वर्ग – सोवियत संघ, ब्रिटेन, अमेरिका, जापान, और जर्मनी द्वारा स्वीकारा गया | भारत आर्थिक विकास के लिए पूर्व और पश्चिम दोनों के साथ करार किया गया | हालाँकि १९६२ सितम्बर-अक्टूबर में सीमा पर घटनाएँ गुट-निरपेक्षता आन्दोलन के लिए एक गंभीर चुनौती दी गयी | भारत पर चीनी आक्रमण के कारण अब यह मान्य था जो कि गुट-निरपेक्षता एक उपयोगी उद्देश्य पूरा करने के क्रम में तत्काल रक्षा-जरूरतों के साथ समझौता किया जाना चाहिए |निर्गुट भारत, कल्पित उपनिवेशवाद के खिलाफ एक संघर्ष के रूप में और अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के ध्रूविकरण की ओर बढ़ रहे सैन्य ब्लॉक और क्षति युद्ध को परिणाम स्वरुप एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, कैरिबियन और

दुनिया के अन्य भागों के लोगों की चौतरफा मुक्ति के लिए संघर्ष किया। गुट-निरपेक्षता ने सफलता हासिल की और विश्व-शांति को बढ़ावा देने के प्रयासों में एक निर्णायक भूमिका जारी रखी।शीत युद्ध की समाप्ति के बाद गुट-निरपेक्षता आन्दोलन की प्रासंगिकता पर बहस हुई।

हालाँकि संयुक्त राज्य अमेरिका का एकल अस्तित्व और उसका हावी प्रभाव आज के सन्दर्भ में दुनिया भौम-ध्रुवीय बनाने के लिए खतरा है। क्षेत्रीय साम्राज्यवाद के रूप की बजाये, आर्थिक साम्राज्यवाद के बदसूरत चेहरे ने इस की जगह ले ली है। विकसित और विकासशील देशों के बीच की खायी को चौड़ा करना दुनिया में अस्थिरता का एक स्रोत है। संसाधनों तक पहुँच और कर्ज का बोझ आज छोटे देशों के अस्तित्व के लिए खतरा है। गुट-निरपेक्षता आन्दोलन का लक्ष्य साम्राज्यवाद के नए रूपों के मामले में नयी चुनौतियों का सामना करने के लिए आर्थिक जरूरतों के हिसाब से परिवर्तित नहीं होगा, इत्यादि। इसी प्रकार विदेश नीति के प्रबल पक्षधर जवाहर लाल नेहरु ने एक स्वतंत्र भारत के परचम को विदेश नीति के जरिये उन देशों के बीच स्थान दिलवाया जो संसार के नामचीन हैं।

इस बात में कोई अतिश्योक्ति नहीं कि भारत के राजनैतिक जीवन में नेहरु की भूमिका अद्वितीय थी। वह न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दिग्गज थे बल्कि आधुनिक भारत के निर्माता भी थे। उन्होंने लोकतंत्र, धर्म-निरपेक्षता, योजना और समाजवाद की नींव रखी। उन्होंने पंचशील और अपनी गुट-निरपेक्षता की नीति के साथ अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भारत को एक विशिष्ट स्थान प्रदान करवाया। उन का जीवन स्वतंत्रता पूर्व और स्वतन्त्रता युग दोनों समय में मातृभूमि के लिए ही अर्पित रहा।

संदर्भित पुस्तकें

1. Bansal, R., & Gnanadev, N. (2015). Institutionalization of Social Audit Practices in MGNREGAs in Himachal Pradesh. *VEETHIKA-An International Interdisciplinary Research Journal*, *1*(3), 87–95. https://doi.org/10.48001/veethika.2015.01.03.010
2. Barns, M. The Indian Press, London, 1940
3. Barth, A. The Government and the Press. Minneapolis 1953
4. Before Freedom:Nehru's letter to his sister by Jawaharlal Nehru, HarperCollins Publishers (2000)
5. Gupta, S., & Mittal, P. (2015). Base Erosion and Profit Shifting: The New Framework of International Taxation. *Journal of Business Management and Information Systems*, *2*(2), 108–114. https://doi.org/10.48001/jbmis.2015.0202009
6. Khuntia, J., & Bajaj, R. (2015). आज के युग में कौटिल्य अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता. *VEETHIKA-An International Interdisciplinary Research Journal*, *1*(1), 102–106. https://doi.org/10.48001/veethika.2015.01.01.015
7. Khuntia, J., & Bajaj, R. (2016). Bhartiya Arthvyavastha Mein Gandhiwadi Arthshastra Ki Bhumika. *VEETHIKA-An International Interdisciplinary Research Journal*, *2*(1), 84–90. https://doi.org/10.48001/veethika.2016.02.01.017
8. Nehru and Democracy:The political thought of an asian democrat,smith,orient Longmans,1958
9. Nehru's India ,Oxford,mushruil hasan
10. रिलेशन विथ चाइना, आर्टिकल, ममता अग्रवाल.